जहरीला चारा

दो तीन बार पूर्व बेटिंग के पश्चात ही अभ्यास मे लाना चाहिए ।

20 ग्राम जिंक फास्फाइड मे 20 ग्राम वनस्पति तेल(मूंग फली , नारियल ,तिल)तथा 960 ग्राम टूटे चावल को संरूप से मिलाकर जहरीला चारा तैयार करना चाहिए।

जहरीले चारे को बिलों में रखें ।

भंडारण मे कृंतक प्रबंधन

भंडारण क्षेत्र साफ सुथरा होना चाहिए ।

धातु तल तथा सीमेंट के साथ आधुनिक भंडारण संरचना का उपयोग करना चाहिए।

प्रकोप के समय ब्रोमोडाइलोन केक 0.005: जिसका पूर्व उल्लेख किया गया है का इस्तेमाल करना चाहिए ।

पुर्णोपाय

- कृंतक नाषक मनुष्यों और जानवरों के लिए अत्याधिक विषैले होते हैं।
- जहरीला चारा बनाने के लिए अलग पात्र का प्रयोग करे। घरेलू बर्तनो का उपयोग न करें।
- जहर को बच्चों और पालतू जानवरों की पहुँच से दूर रखे।
- कृंतक नाषक इस्तेमाल करने के समय धूम्रपान करना, खाना एवं पीना एकदम से वर्जित हैं।
- कृंतक नाषक वाले पात्र अच्छे हवादार कमरे मे ही खोले जाएं।
- इस्तेमाल न किया गया हुआ चारा, पात्र तथा मृत कृंतक को गहरे गड्ढे मे दबा देना चाहिएं।
- जहर संदूषित हाथों को फार्म, तालाब के किनारे तथा जलाशय में न धोएं।

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

भाकृअनुप
ICAR

Agrisearch with a human touch

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करे
निदेशक
भा.कृ.अनु.प–केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान
पोस्ट बॉक्स नंरू१८१, पोर्ट ब्लेयर ७४४१०३
अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह

Design & Printed at Mahesh Graphics, Junglighat
Tel.: 03192 - 233521, Mob: 9434260944 | pressandamanyugam@gmail.com

धान प्रक्षेत्र व भंडारण में चूहा प्रबंधन

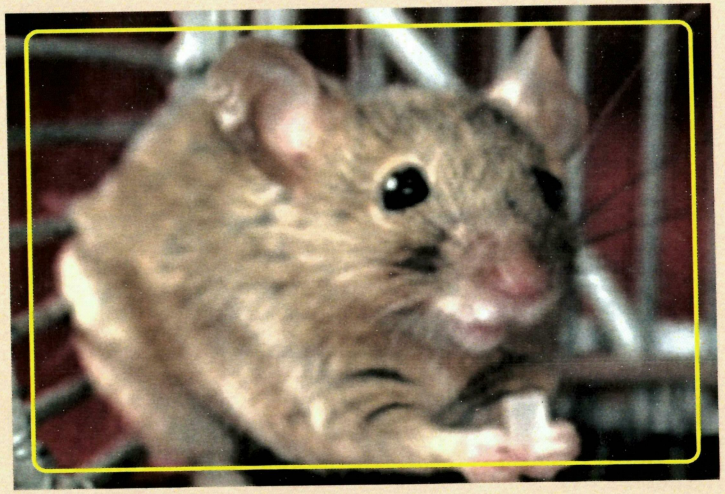

के. सक्तिवेल
आर. के. गौतम
पी. के. सिंह
योगेशवरी
अर्चना शर्मा
एस. दाम रॉय

2017

भाकृअनुप
ICAR

केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान
अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह

CIARI
ICAR
तमसो मा ज्योतिर्गमय

धान प्रक्षेत्र व भंडारण मे चूहा प्रबंधन

कृंतक मैमेलिया क्लास के अंतर्गत एक बहुत ही भिन्न–भिन्न प्रकार वाले समूह के सदस्य हैं जिनमें चूहे,जेरबिल,गिलहरी,पोर्कुपाइन,माइस तथा तिल चूहे आते हैं। कृंतक की लगभग 2000 जातियों की जानकारी उपलब्ध है जिनमें से सीमित संख्या ही पूरे विश्व के कृषि प्रक्षेत्र व भंडारण मे हानिकारक जीव साबित हुई है।

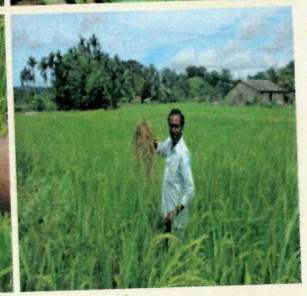

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह मे कृंतक की कुल 19 जातियाँ देखी गई है जिनमें से सिर्फ 3 जातियाँ(रेट्स पल्मारमस, रेट्स स्टोइकस तथा रेट्स बुर्स) यहाँ की स्थानीय प्रजातियाँ हैं। कृषि की फसलों तथा सामग्री एवं सर्वजन स्वास्थ के नुकसान द्वारा कृंतक का प्रभाव महत्वपूर्ण होता है। धान अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में महत्वपूर्ण खाद्य फसल है। धान के अंतर्गत 8100 हैक्टेयर क्षेत्र है। यह एक खरीफ मौसम की फसल है जिसे जुलाई से अक्टूबर माह तक उगाया जाता है। धान के खेत व भंडारण मे कृंतक समस्या एक गंभीर खतरा बनकर उभरी हैं। पिछले कुछ वर्षों से विशेष रूप से उत्तरी अंडमान में लेस्सेर बेंडीकूट चूहे या इंडियन तिल चूहे (बेंडीकोटा बेंगालेन्सिस) जो विदेशी प्रजाती है उन्हे धान के खेत एवं भंडारण मे नुकसान पहुँचाने के लिए दोषी पाया गया है। क्षति स्तर की सीमा 3.66: से 25: तक है तथा कुछ मामलों में सामान्य हानिकारक कीड़े एवं बीमारी से चूहों की समस्या कहीं अधिक तीव्र क्षति होती है।

धान के खेतों मे कृंतक क्षति को कैसे पहचाने?

1) कृंतक धान के फसल बढ़वार की सभी अवस्थाओं में क्षति पहुंचाते है।
2) धान के प्रक्षेत्र मे गंभीर इनफेस्टेशन दूधिया तथा दानों के पकने की अवस्था में देखा जाती है।
3) स्पष्ट डाईगोनल चीरा (45 कोण) टिल्लर्स की ओर 5–10 सेंटीमीटर जमीन स्तर से ऊँचे पर देखे जाते है।
4) जीवित बिलों को धान के प्रक्षेत्र की मेडियों पर देखा जा सकता है।

धान के भंडारण मे क्षति

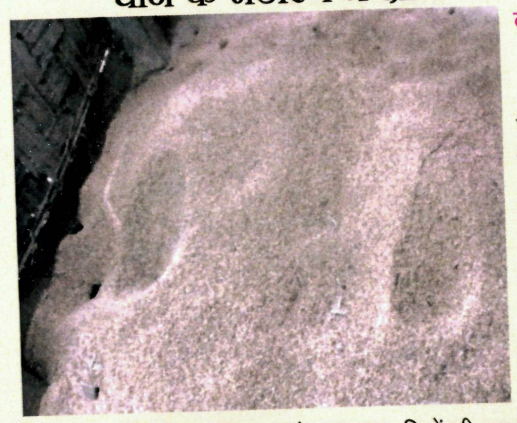

कृंतक का धान के प्रक्षेत्र में पारंपरिक प्रबंधन

खेत तैयार करने के समय गहरी जुताई करें ताकि छिपे हुए कृंतक बिल नष्ट हो जाएं।

मेडियों को कम से कम संभव स्तर पर पतला(संकीर्ण) बनाए ताकि नए बिल बनाने में रुकावट हो।

खरपतवार मुक्त खेती करने से चूहों के प्रकोप को कुछ स्तर तक कम किया जा सकता है।

नियमित यांत्रिक फंदो द्वारा कुछ दिनों की अवधी पर चूहों को मारकर चूहों की समस्या को दूर किया जा सकता है।

धान के खेत में कृंतक का रसायनिक प्रबंधन

- कृंतक के बहुत अधिक प्रकोप के समय यह प्रबंधन जरूरी है।
- ब्रोमोडाइलोन केक 0.005: जो कि सामान्यता 'रैट किल' के नाम से जाना जाता है को जीवित बिल में रखा जाता है।
- जीवित बिल की अनुपस्थिति में रिक्त सुधारी खाली बेलनाकर प्लास्टिक पानी कि बोतलें जो कृंतक बिल से मिलती जुलती है का इस्तेमाल कर सकते हैं।

गंभीर प्रकोप के समय सुरक्षा पुरनोपाय से जिंक फास्फाइड तरीके को उपयोग में लाना चाहिए । इसमें दो चरण आते हैं:

1) चारा (पूर्व बेटिंग)
2) जहरीला चारा

1) पूर्व बेटिंग

बिना जहर मिलाए दो– तीन बार बेटिंग करना चाहिए जिससे कृंतक आकर्षित हो और उनकी आदत चारा खाने की पड़े।इसमे एक किलो टूटे चावल में 20 ग्राम वनस्पति तेल को संरूप से मिलाना चाहिए तथा छोटे दृछोटे समाचार पत्रों के पैकेट में डालकर जीवित बिल मे रखा जाना चाहिए। इस चरण को दो तीन बार दोहराना चाहिए।

सावधानीपूर्वक ज़हरीला चारा बनाना